षोडश संस्कार - संक्षिप्त परिचय

विषयप्रवेशः-

भारत देश प्राचीन काल से अन्य देशों से उन्नत और पवित्र माना जाता है। किसी भी देश को उन्नत या पवित्र होने में उस देश के वासियों का रहन-सहन, चरित्र, व्यवहार आदि ही कारण होता है। छान्दोग्योपनिषद् (5.11.5) में भारत देश का संक्षिप्त परिचय तत्कालीन राजा अश्वपति ने इस प्रकार दिया है-'**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतो।**' अर्थात् मेरे देश में कोई चोर नही, कोई कृपण नहीं, कोई मद्यपान, धूम्रपान, आदि नशा करनेवाला नहीं, कोई अनाहि-ताग्नि नहीं, कोई अनपढ नही और जब कोई व्यभिचारी पुरुष ही नहीं तो वेश्या कैसे हो सकती है। ऐसी स्थिति का कोई न कोई कारण अवश्य होगा और वह कारण यही है कि राजा प्रजा सभी वेदों में विहित सभी संस्कारों से संस्कारित होकर समस्त नित्य व नैमित्तिक कर्मो को करते रहे हैं, जिनके कारण उनका जीवन उन्नत, पवित्र, समृद्ध और महान रहा है।

पशुओं के समान मानव के बच्चे में भी जन्म से ही कुछ हरकतें ऐसी होती हैं कि वे हमें उसके पूर्व जन्म को स्वीकार करने केलिये मजबूर कर देती हैं, जैसे स्तन पान करना, मां के आंचल को सुरक्षित समझना, इत्यादि। लगता है कि इन हरकतों की एक अमिट छाप निश्चित रूप से बच्चे में है, जिसे संस्कार कहा जाता है। वे अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के होते हैं। लेकिन हम यहां इस लेख में उन संस्कारों पर विचार नहीं कर रहे हैं। किन्तु वेदों में विहित और स्मृति, धर्मसूत्र और अन्य शास्त्र ग्रन्थों में मानव के कल्याण केलिये विहित संस्कारों पर विचार अभिव्यक्त कर रहे हैं।

जैसे खेती की जमीन को जोतकर सफाई करके जिन नक्षत्रों में बारिस आने की संभावना होती है उसके अनुसार उचित नक्षत्र व मुहूर्त में बीज बोते हैं ताकि अच्छी से अच्छी फसल हो सके उसी प्रकार हमारा कर्तव्य है कि जब हम सन्तान प्राप्त करने केलिये पत्नी के गर्भ में बीज बोते हैं (यानि गर्भाधान करते हैं) तोउचित मुहूर्त देखना चाहिये। तथा जैसे हम लोग उत्पन्न दालें, सब्जी आदि को विना सफाई व शुद्धि किये इस्तेमाल नही करते हैं उसी प्रकार जब हम बच्चों को पाल पोसकर बडा करते हैं तो उन का भी समय-समय पर शुद्धीकरण करना चाहिये जिन्हें संस्कार कहा जाता है। संस्कार माने संवारना, सुधारना, साफ करना, शुद्ध करना, मल - दोष दूरकर गुण आधान करना, इत्यादि। गौतमीय धर्मसूत्र के अनुसार वे संस्कार कुल 48 हैं-'**अष्टाचत्वारिंशत संस्काराः**' 8.22। इस लेख में उनमें से प्रमुख 16 संस्कारों पर विचार करेंगे। वे 16 संस्कार हैं- गर्भाधान, पुंसवनं, सीमन्तः, विष्णुबलिः, जातकर्म, नामकरणं, उपनिष्क्रमणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेध, चौलं, अक्षराभ्यास, उपनयनं, समावर्तनं, विवाह, उपाकर्म और अन्त्येष्टि। ये सब संस्कार नैमित्तिक कर्म के अन्तर्गत हैं जो कि नित्य कर्म (संस्कार को आरम्भ करने से पहले सन्ध्यावन्दन, देवपूजा, नित्य होम आदि से निवृत्त होकर संस्कार करने केलिये संकल्प करने के अनन्तर विघ्नेश्वरपूजन, मातृकापूजन, नवग्रहपूजन और अभ्युदयश्राद्ध आदि अवश्य कर लेना चाहिये) करने के पश्चात् ही करना होता है।

1. गर्भाधान संस्कार -

पशुओं के समान पत्नी के साथ संबंध कर सन्तान उत्पन्न सभी दम्पती करते ही हैं। लेकिन यदि वेदों में बतायी विधि से गर्भाधान करें तो आप (गोरा/सांवला, विशेष पढा लिखा/साधारण, गुणी/क्रूर

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

इत्यादि) जैसी सन्तान प्राप्त करना चाहते हैं वैसी ही सन्तान को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये बृहदा –रण्यक उपनिषद् के 6.4.1 से 6.4.28 तक के मन्त्रों को पढकर अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

गर्भाधान के मुहूर्त को जानना अत्यन्त आवश्यक है। वेद में कहा गया है– **'ऋतौ भार्यामभिगच्छेत्'** अर्थात् पत्नी के मासिक धर्म के पश्चात् ही उसके साथ समागम करे। जिस दिन पत्नी का मासिक धर्म खत्म हो उस दिन से गिनना शुरू करके 8वीं, 10वीं, 12वीं रात में बीज बोने से पुत्ररत्न होता है और 7 वीं, 9 वीं, 11वीं रात में बीज बोने से कन्यारत्न होता है। लेकिन शर्त यह है कि विधि का पूर्णरूप से पालन कर उचित मुहूर्त में समागम करे। ज्योतिष के अनुसार पति व पत्नी के राशी, नक्षत्र, चन्द्रबल और गुरुबल पर विचार कर निम्न तालिका से समागम का दिन व मुहूर्त निश्चय कर लेना चाहिये। इस प्रकार अभीष्ट संतान प्राप्ति केलिये यह संस्कार है।

√ नन्दातिथि >	1 प्रतिपत्	6 षष्ठी	11 एकादशी	सोम व शुक्र	रवि व मंगल	शनि व बुधवार
√ भद्रातिथि >	2 द्वितीया	7 सप्तमी	12 द्वादशी	बुधवार	सोम व शुक्रवार	मंगलवार
√ जयातिथि >	3 तृतीया	8 अष्टमी	13 त्रयोदशी	रवि व मंगल	बुधवार	गुरुवार
X रिक्तातिथि >	4 चतुर्थी	9 नवमी	14 चतुर्दशी	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार
√ पूर्णातिथि >	5 पंचमी	10 दशमी	15/30 पूर्णिमा/ अमावस्या	गुरुवार	शनिवार	रवि व सोमवार
शुक्लपक्षफल >	हीन	मध्यम	उत्तम	सिद्धियोग ↑	मृत्युयोग ↑	अमृतयोग ↑
कृष्णपक्षफल >	उत्तम	मध्यम	हीन	–	–	–

2. पुंसवन संस्कार–

गर्भ धारण होने के बाद दूसरे या तीसरे महीने में पति पुंसवन संस्कार करेगा। पुंनक्षत्र यानि हस्त, मूल, श्रवण, पूनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य में चन्द्रमा के योग होने पर तथा ताराबल, चन्द्रबल, पंचक–शुद्धि, जीव–नेत्रयोग और लग्न आदियों को ज्योतिषियों से निश्चय कर यह संस्कार किया जाता है। यह संस्कार प्रथम बार गर्भ धारण का ही होता है और यह गर्भ रक्षा पूर्वक गर्भ का सम्यक् अभि वृद्धि फलक संस्कार है।

विधि:– मुहूर्त के पूर्व दिन रात्री में पीपल, गूलर और वट (बरगद) के डंटल सहित 5 – 5 पत्ते व जटा और कुशा के मूल को प्रथम प्रसूती में बछडे को जन्म दी हुयी गाय के दूध से छ: से आठ साल की कन्या के द्वारा सिल पर लोढा से पिसवाकर सुरक्षित रखें। उस पिसे हुये द्रव्य को नये कपडे में र खकर पति पत्नी के दाहिने नासिका रन्ध्र में निचोड कर नासा छिद्र से ही पत्नी को पिलायेगा। पत्नी उस दिन उपवास रखेगी।

3. सीमन्त संस्कार–

गर्भ धारण होने के बाद छठे या आठवें महीने में पति द्वारा पुंनक्षत्रों में सीमन्त संस्कार किया जाता है। इस संस्कार में मूंगदाल और तिल से मिश्रित चावल का चरु तैयार करके स्थालीपाक होम करने

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

के बाद स्विष्टकृद्धोम एवं महाव्याहृति होम किया जाता है। तदनन्तर पत्नी को अग्नि के पश्चिम भाग में बैठाकर केश विभाजन करें। केश विभाजन कंघी से न करें, बल्कि तीन कुशा, पीपल जटा, सोम ल ता (कोई भी क्षीरिणी लता), अपक्वयुग्मफलवाले गूलर को इक्कट्ठा बांधके प्रोक्षण कर शुद्ध कर लें। इससे ''**ॐ भूर्भुवस्स्वर्विनयामि**'' इस मन्त्र को दुहराते हुये केश विभाजन करें। फिर वेणी बांधकर जिससे केश विभाजन किया था उस कुशा आदि को वेणी में इस मन्त्र से ''अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव'' बांधना है। यह संस्कार भी धारित गर्भ रक्षा पूर्वक गर्भ का सम्यक् अभिवृद्धि फलक संस्कार है।

4. विष्णुबलि: –

गर्भ धारण के बाद आठवें महीने के अन्त अथवा नौवें महीने के आरम्भ में पति द्वारा पत्नी के सुख प्रसव और प्रसूत की अविकलता केलिये करना होता है। इस संस्कार में विष्णुभगवान की मूर्ति अथवा शालिग्राम अथवा यन्त्र का पुरुषसूक्त से षोडशोपचार पूजन करके सारस्वतमन्त्र का 1100 जप करें व 11 ब्राह्मण को भोजन करायें और सोने/चांदी की एक गौ दान करें। इस संस्कार में जगत के पालक विष्णु की पूजा ही प्रधान है ताकि विष्णु की कृपा से शिशु के सुरक्षित जन्म पूर्वक माता की भी सुरक्षा हो।

5. जातकर्म –

इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उसकी नवजात शिशु सकुशल पूर्णरूप से स्वस्थ रहे और लम्बी आयु हो। अत: जातकर्म संस्कार के दो प्रमुख अंग हैं– मेधाजनन और आयुष्यकरण। बच्चे के जन्म के बाद व नालछेदन के पूर्व पिता सूतिका गृह में प्रवेश कर जातकर्म करने का संकल्प करेगा – '**ॐ विष्णु.....अमुकनक्षत्रे अमुकराशौ जातस्य मम संतानस्य सकलदोषनिवृत्तिद्वारा मेधायुषोरभि वृद्ध्य-र्थं जातकर्मकरिष्ये।**'

मेधाजनन– चांदी या कांसे के पात्र में शहद और घी को सोने के चम्मच से मिलाकर शिशु की जिह्वा पर इन मन्त्रों से लगाना है – '**ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवस्स्वस्त्वयि दधामि**'।

आयुष्यकरण– शिशु के दाहिने कान के पास '**ॐ अग्निरायुष्मान् स वनस्पतिभिरायुष्मान् तेन त्वाआयुषायुष्मन्तं करोमि।**' इत्यादि आठ मन्त्रों को आठ बार पाठ करना है।

इसके बाद पिता बच्चे के चारों और घूमते हुये अनुप्राणन करता है यानि पूर्वादि क्रम से प्राण, अपान , व्यान, उदान और ऊपर देखते हुये समान – ऐसे पंच प्राणों का नाम उच्चारण करता है। तत्पश्चात् मन्त्रोच्चारण पूर्वक बच्चे का अभिमर्षन(स्पर्श) करके बच्चे की मां का (पत्नी) का विधि पूर्वक मन्त्रों से अभिमन्त्रण करता है।

6. नामकरण –

संसार में समस्त व्यवहार नाम के विना नहीं हो सकता और व्यवहार केलिये नाम को बारम्बार पुकारने के माध्यम से दो फल अपेक्षित है – प्रथम यह है कि हम परमात्मा का स्मरण कर सके और दूसरा यह है कि उसके संभावित अवगुण को दूर कर सद्गुण को आधान करें, इसलिये बच्चे का नाम रखा जाता है। यद्यपि श्रुति में विधि है कि– 'एकादशेऽहनि पिता नाम कुर्यात्' अर्थात् पिता 11 वें दिन

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

नामकरण संस्कार करें तथापि 11वें दिन उचित मुहूर्त न मिले तो 10 वें अथवा 12 वें दिन भी नवजात शिशु के नक्षत्र आदि के अनुसार शुभ मुहूर्त तय करके बच्चे को स्नान कराके स्वयं दम्पती नित्य कर्मो से निवृत्त होकर संकल्प करें– '**ॐ विष्णु..... अमुकनक्षत्रे अमुकराशौ च जातं मम सन्तानं नामक रणसंस्कारेण संस्करिष्यावः।**' ज्योतिषशास्त्र सम्मत नक्षत्र के पाद के अनुसार निर्धारित अक्षर से आर ब्ध एक अच्छा सा नाम माता–पिता दोनों ही बच्चे के दाहिने कान में सुनावें। अन्त में पुनः पुण्याहवाच न किया जाता है।

7.उपनिष्क्रमणं –

स्वरूप में ही मग्न बच्चे को बाहरी जगत का परिचय कराकर व्यावहारिक बनाने केलिये यह संस्कार है। शास्त्र विहित संस्कार न होने पर भी पूरे देश में अत्यन्त प्रचलित छठी पूजा नाम के संस्कार को करने के बाद यथासमय बच्चे को चन्द्रदर्शन, सूर्यदर्शन एवं देवी–देवताओं के दर्शन कराते हुये नि ष्क्रमणिका के रूप में उपनिष्क्रमण संस्कार किया जाता है। लौटने के बाद पिता सन्तान का मुख देखते हुये इस मन्त्र का उच्चारण करें– '**अंगादंगात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे। 'आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्।।**' तत्पश्चात् निम्न मन्त्र का पाठ कर बच्चे के ललाट को सूंघें –'**प्रजापतेष्ट्वा हिं कारेणावजिघ्रामि सहस्रायुषाऽसौ जीव शरदः शतम्।**' इत्यादि शेष विधियों को धर्मशास्त्रों के अनु– सार करें।

8. अन्नप्राशनं –

बच्चे के छठें मास में पिता द्वारा बच्चे को अन्न खिलाने को अन्नप्राशन संस्कार कहते हैं। यद्यपि अन्न खाने का फल प्रत्यक्ष है – भूख निवृत्ति पूर्वक तृप्ति तथापि इस संस्कार का कुछ अदृष्ट फल भी शास्त्रों में माना गया है। क्योंकि छठे महीने में मन का विकास होने लगता है, यदि उस वक्त शास्त्रीय विधि से शुभ मुहूर्त में अन्न खिलायेंगे तो निश्चित ही बच्चे का मन अत्यन्त उत्कृष्ट होगा। जैसे कि छान्दोग्योपनिषद् (6.5.4) में कहा है– '**अन्नमयं ही सोम्य मनः**', तदनुसार दुनिया में भी कहावत है– ' जैसा खावे अन्न वैसा बने मन'। इस संस्कार से यह भी प्रेरणा मिलती है कि जिस प्रकार शास्त्र विहित विधि से मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक इस संस्कार में शिशु को अन्न खिलाया जाता है वैसे ही हम सब को भी भोजन ग्रहण करने की (खाने की) विधि जानकर मन्त्रों के उच्चारण पूर्वक शुद्ध व सात्त्विक आहा र को ही नित्य ग्रहण करना चाहिये ताकि हमारा मन विवेकशील बना रहे। क्योंकि मैत्रायण्युपनिषद् (4 .11) में कहा है– '**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।**'

9. कर्णवेधः –

दमा और अन्त्रवृद्धि (हर्निया) आदि रोग न होने के उद्देश्य से और अनेकों वैदिक यागों में कुण्डल धारण अति आवश्यक होने से कर्णवेध को एक संस्कार का रूप दिया गया है। बच्चे के 12 मास यानि एक वर्ष की आयु में इस संस्कार को करना होता है। कुछ लोग इस संस्कार को चौल कर्म के साथ करते हैं। वैद्य या सोनार सोने या चांदी या लोहे के सूई कान के निम्न भाग में छिद्र कर उसमें मोड देते हैं। स्त्रियों के द्वारा लोक गीत गाया जाता है। इस संस्कार में विशेष मन्त्रों का प्रयोग नहीं है।

10. चौलं (मुण्डन) –

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

यद्यपि इस संस्कार को 1 वर्ष से 3 वर्ष पूर्ण होने से पहले करने की प्रथा है तथापि आपस्तम्ब गृह्य सूत्र (6.16.3) के अनुसार- **'जन्मनोऽधि तृतीये वर्षे चौलं पुनर्वस्वोः'** अर्थात् जन्म से तीसरे वर्ष में पुनर्वसु नक्षत्र युक्त शुभ मुहूर्त में चौल (यानि मुण्डन/चूडा कर्म/शिखीकरण) संस्कार करना चाहिये। यह एक अनिवार्य संस्कार है क्योंकि शिखा के विना बालक को आगे के किसी भी संस्कार व बालक स्वयं किसी भी शास्त्रीय कर्म नही कर सकता है। शास्त्र के अनुसार विवाह भी नही कर सकेगा। इस संस्कार के मुख्य अंग हैं- केश उन्दन (बाल भिगोना), केश विभाजन (अलग करना), कुशाच्छादन, छुरिका आसादन, कुशा सहित वपन (काटना), प्रक्षेप (उत्तरदिशा के केशों को उत्तरदिशा में बैल के गोबर पर कुशा सहित बालों को फेंकना, उसके बाद क्रम से पश्चिम-दक्षिण और पूर्व दिशा में कुशा स हित केशों का वपन करके पूर्ववत् फेंकें), छुरिका भ्रमणं, तदनन्तर अग्नि स्थापन पूर्वक प्रधान आहुति पर्यन्त कर्म करके जयादि होम, राष्ट्रभृद्धोम, अभ्यातान होम, प्रायश्चित्तहोम, व्याहृति होम और स्विष्टकृ द्धोम कर समाप्त करना है।

11. अक्षराभ्यासः –

बच्चे के 5 वें वर्ष में विद्यारम्भ/अक्षराभ्यास संस्कार किया जाता है। वैसे तो चूडा संस्कार के बाद से ही माता पिता बच्चे को अ से क्ष पर्यन्त अक्षर और संख्या के उच्चारण सिखाते हैं लेकिन शास्त्रीय नामों यानि तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण (पंचांग), 60 संवत्सर, ऋतु, अयन, मास आदि के नामों का उच्चारण विना संस्कार के नही कराना चाहिये। क्योंकि गलत तरीके से किया हुआ कार्य कभी उचित फल नही देता है। उचित मुहूर्त में घर के वृद्ध अथवा माता पिता द्वारा बच्चे से निम्न श्लोक व मन्त्र का पाठ करवाया जाता है - **'सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भव तु मे सदा।।'** और **'ॐ नमो नारायणाय सिद्धम्।'** वास्तव में विद्या का आरम्भ उपनयन संस्कार के बाद गुरु कुल जाकर ही होता है।

12. उपनयनं –

त्रैवर्णिकों केलिये चूडा कर्म के समान उपनयन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्कार है। यह संस्कार उत्तरायण में ही किया जाता है। इसकी विधि अत्यन्त विस्तृत है और यह त्रिदिवसीय कार्यक्रम है। चारों वेद के त्रैवर्णिकों केलिये इस संस्कार की विधि में भेद है। अतः इसके विधि-विधान को धर्मशास्त्रों और सं- स्कार विधि बोधक ग्रन्थों से जानकर ही करना चाहिये। संक्षेप में इसके अंग इस प्रकार है। प्रथम दिन आचार्य व पिता कृच्छ्रचरण, स्वस्तिवाचन, अंकुरार्पण, नवग्रहयाग, नान्दीश्राद्ध आदि को संकल्प पूर्वक करके 12000 गायत्री जप कर मण्डप तैयार करें। द्वितीय दिन- नित्य कर्म(संस्कार को आरम्भ करने से पहले सन्ध्यावन्दन, देवपूजा, नित्य होम आदि से निवृत्त होकर उपनयन संस्कार करने केलिये संकल्प करने के अनन्तर विघ्नेश्वरपूजन, मातृकापूजन, नवग्रहपूजन और अभ्युदयश्राद्ध आदि अवश्य कर लेना चाहिये) करने के पश्चात् ब्राह्मणों से अनुमति लेकर बालक को मण्डपशाला से बाहर ले जाकर अग्नि स्थापन कर चूडाकर्म के समान बालक का मुण्डन करायें और वस्त्र, तिलक आदि से अलंकृत करें। तत्पश्चात् अग्नि के पश्चिम भाग में जाकर बालक को अपने दाहिने भाग में बिठाके मंत्रों से ब्रह्मचर्य प ालन करने की प्रतिज्ञा कराना है। इसके बाद आचार्य द्वारा वस्त्र पहनाकर मेखला बन्धन किया जाता है । तृतीय दिन- आरम्भिक पूजा-पाठ करके यज्ञोपवीतधारण, अजिनधारण, दण्डदान, अंजलि पूरण, सूर्योदीक्षण, हृदयस्पर्शन, प्रश्नप्रतिवचन (गोत्र, प्रवर आदि के विषय में), भूतपरिदान, अग्निपरिक्रमा,

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

आज्याहुतियां, अनुशासन, गायत्री उपदेश, समिदाधान पूर्वक हवन, अंगालम्बनं, भिक्षा- चरण, वेदारम्भ और उत्सर्जन (प्रतिवर्षश्रावणी पूर्णिमा से आरम्भकर पौषी पूर्णिमा में उत्सर्जन करें)।

13. समावर्तनं -

लगभग 12 साल अथवा जितना अध्ययन करने की इच्छा हो उतना अध्ययन करने के पश्चात् आचार्य से अनुमति प्राप्त कर चन्द्रबल व ताराबल युक्त शुभ मुहूर्त में ब्रह्मचारी समावर्तन संस्कार करे। यदि ब्रह्मचर्य किसी कारणवश खण्डित हो तो प्रायश्चित् के रूप में तीन कृच्छ्रचरण कर गुरु को दक्षि -णा आदि से तृप्त करने के पश्चात् ही समावर्तन करेगा। नित्यनैमित्तिककर्मो को करके आचार्य संकल प करें- '**ॐ श्रीविष्णु....अस्य ब्रह्मचारिणः गृहस्थाश्रमप्राप्तिद्वारा सकलश्रेयःप्राप्त्यर्थं परेश्वरप्रीत्य र्थं च समावर्तनाख्यं कर्म करिष्ये।**' गणेश पूजन से नान्दीश्राद्ध पर्यन्त कर्म करने के पश्चात् ब्रह्मचारी आचार्य से पूछे-''**अहं स्नास्ये**'', आचार्य जवाब में कहे-''**स्नाहि**'', उसके बाद अग्नि स्थापन कर ब्रह्म वरा से आज्यभागान्त करके उपाकर्म विधि के अनुसार अनपे वेदानुसार हवन कर विमोकान्त कर्म करें। तत्पश्चात् घडे से स्नान, मेखला मोचन, दण्ड निधान, व्रतोद्यापन पर्यन्त कर्म किया जाता है।

14. विवाह -

यह सबसे बडा संस्कार है जिसमें धर्म केलिये ही वर व कन्या एक दूसरे केलिये समर्पित होने का संकल्प कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं। वैदिक व स्मार्त विवाह पद्धति के वेद, शाखा, क्षेत्रीय री ति रिवाजों पर आधारित अनेक ग्रन्थ छपे हैं, उनके अनुसार यह संस्कार करना चाहिये।

15. उपाकर्म -

यह संस्कार प्रत्येक वेद के अनुयायी केलिये अलग-अलग है। यह त्रैवर्णिकों केलिये अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसमें सालभर जो भी नित्य एवं नैमित्तिक कर्म और लौकिक व व्यावहारिक कर्म में हुयी त्रुटियों केलिये प्रायश्चित्त किया जाता है तथा सालभर में संभावित सूतक, स्वप्नदोष, स्त्रीसमाग म आदि के कारण यज्ञोपवीत को बदलने केलिये आवश्यक न्यूनतम 24 यज्ञोपवीतों की पूजा कर उन्हें रख लिया जाता है।

16. अन्त्येष्टि -

इस संस्कार को प्रेताग्निहोत्र भी कहा जाता है। सूत्र ग्रन्थों के आधार पर व श्राद्ध पद्धतियों के आधार पर मृतशरीर को अनेक अंगकर्म करके जलाने से लेकर शान्तिकर्म (वैकुण्ठ समाराधना/कैलास वास/तेरहवीं/रसम पगडी) पर्यन्त किया जाता है। यह संस्कार जीव के पुनर्जन्म व ऊर्ध्वगति केलिये अत्यन्त आवश्यक है और यह सन्तान का कर्तव्य भी है कि वह अपने माता, पिता, आदि की सद्गति व आत्मशान्ति केलिये शास्त्रविहित इस कर्म को करे।। हरिः ॐ तत्सत्।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM